D.O. No...1776.....AM

राधा मोहन सिंह
RADHA MOHAN SINGH

कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री
भारत सरकार
MINISTER OF AGRICULTURE
& FARMERS WELFARE
GOVERNMENT OF INDIA

29 AUG 2017

संदेश-2017

संविधान सभा द्वारा 14 सितम्बर, 1949 को हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया था क्योंकि यह देश के अधिकांश वर्ग द्वारा बोली व समझी जाती है। इसके साथ भारत की धार्मिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक परम्पराएं जुड़ी हुई हैं। यह ऐतिहासिक निर्णय 14 सितम्बर, 1949 को लिया गया था। इसलिए प्रत्येक वर्ष 14 सितम्बर को हम हिन्दी दिवस के रूप में मनाते हैं। किसी भी देश की संस्कृति को एकता के सूत्र में पिरोने के लिए एक राष्ट्रभाषा का होना अत्यंत आवश्यक है। महात्मा गांधी ने भारत के लिए राष्ट्रभाषा के लक्षण गिनाए थे। उन्होंने स्वतंत्रता के महासमर में भारत की संपर्क भाषा के लिए जो आह्वान किया था उसके अनुसार वह ऐसी भाषा हो जो धार्मिक, आर्थिक और राजनैतिक बोलचाल को सहज सरल बनाए रख सके और ऐसी तो वो हो ही जिसे ज्यादातर लोग बोलते हों। गांधी जी ने यह अनुभव किया था कि अंग्रेजी के कारण ही भारत के शासक आम लोगों से दूर नजर आते हैं। हिन्दी एक अत्यंत सरल, समृद्ध एवं सशक्त भाषा है और भारत की राष्ट्रीय सांस्कृतिक एकता की महत्वपूर्ण कड़ी है। उसके मूल में विश्व की प्राचीनतम समृद्ध भाषा संस्कृत है और साथ में तमाम भारतीय भाषाएं उसकी ताकत हैं। हिन्दी और सभी भारतीय भाषाएं कभी भी अंग्रेजी की अनुचरी नहीं हो सकती। उन्हें तो आपस में ही संवाद करना होगा। यह भरोसा किया गया कि हिन्दी के राजभाषा होने का मतलव यही है कि राज्य के तंत्र में हिन्दी के साथ सभी भाषाएं एक गहन भारतीय संवाद का माध्यम बन सके।

देश में आम बोल चाल की भाषा के रूप में हिन्दी का प्रयोग काफी बढ़ा है। सरकारी कार्यालयों में सरकारी काम-काज में भी हिन्दी का प्रयोग किया जा रहा है। पहले की अपेक्षा सरकारी कार्यों में हिन्दी का प्रयोग काफी हो रहा है। इसे और अधिक बढ़ाने की आवश्यकता है। यह जरूरी है कि विभागों में सरकारी कार्य मूल रूप से हिन्दी में हो। इसके लिए शुरूआत हमें, स्वयं से करनी होगी। यदि हम हिन्दी का सही मायने में सम्मान करें तो नई पीढ़ी को भी अपनी भाषा के सम्मान का संस्कार दे पाएंगे।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद देश का शीर्षस्थ कृषि अनुसंधान संगठन है। कृषि विज्ञान के क्षेत्र में इसके 250 से अधिक शोध संस्थान/केन्द्र देश भर में कृषि की अलग-अलग विधाओं में कार्य कर रहे हैं। इन शोध उपलब्धियों तथा अनेक पहलों जैसे फार्मर्स फस्ट, स्टूडेंट रेडी, आर्या, आदि की लोकप्रियता संबंधित हितधारकों के बीच तभी बढ़ेगी जब इनका प्रचार-प्रसार हिन्दी तथा स्थानीय भाषाओं में किया जायेगा।

Office : Room No. 120, Krishi Bhawan, New Delhi-110 001 Tel.: 23383370, 23782691 Fax : 23384129

मैं मानता हूं कि प्रशासनिक स्तर पर हिन्दी में कार्य करने का वातावरण परिषद व इसके संस्थानों में बन चुका है। वैज्ञानिक संगोष्ठियों/सम्मेलनों में भी हिन्दी का प्रयोग पहले की अपेक्षा काफी बढ़ा है। परन्तु जिस स्तर पर हिन्दी का प्रयोग होना चाहिए अभी वह वातावरण नहीं बन पाया है। हम पत्र-व्यवहार में हिन्दी का प्रयोग करने में हिचकिचाते हैं। अपने ही उच्च अधिकारियों को टिप्पणियां लिखने के लिए अंग्रेजी का प्रयोग करते हैं। आज भी इस अपार क्षमता वाली भाषा हिन्दी को कविता, कहानी चुटकुले और पहेलियों की भाषा ही समझते हैं। अपनी भाषा का प्रयोग करते समय हम दूसरों की ओर देखते हैं या अनुवाद का सहारा लेते हैं। स्वयं हिन्दी का प्रयोग करने से बचते हैं। किसी भी अभिव्यक्ति को मूल रूप से स्वयं व्यक्त किया जाए तो उसका सम्प्रेषण कुछ और होता है जबकि अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद की गई भाषा का मूल भाव या अभिव्यक्ति कुछ और होती है।

इसके लिए मैं आप सबका आह्वान करता हूं कि आइए हम सब हिन्दी को उस स्थान पर पहुंचाने का संकल्प लें जिसकी वह हकदार है जिससे यह संपूर्ण देश की पहचान बन सके। इसके लिए हम सभी को एक साथ यह संकल्प लेना होगा कि हम अनुवाद की वैसाखी का सहारा लिए बिना ही अपना समस्त कार्य बिना किसी संकोच के अधिक से अधिक हिन्दी में ही करें।

प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी परिषद व इसके संस्थानों में हिन्दी सप्ताह/पखवाड़ा/हिन्दी चेतना मास मनाया जा रहा है। मैं इस अवसर पर समस्त कर्मचारियों/अधिकारियों का आह्वाहन करता हूं कि इस शुभ अवसर पर अपना समस्त कार्य हिन्दी में करें और यह सुनिश्चित करें कि हिन्दी के सतत विकास हेतु उनके पूर्ण योगदान से राजभाषा को विश्व फलक पर सर्वोच्च स्थान व सम्मान मिल सके।

हिन्दी दिवस पर मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(राधा मोहन सिंह)